विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 26-04-2021

वर्ग अष्टम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

वन्दना

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणी

विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ||

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणी

विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ||

ज्ञान की देवी माँ सरस्वती को मेरा नमस्कार,

वर दायिनी माँ भगवती को मेरा प्रणाम |

अपनी विद्या आरम्भ करने से पूर्व आपका नमन करती हूँ ,।मुझ पर अपनी सिद्धि की कृपा बनाये रखें |

सूर्यो तथा सर्वलोकस्य चक्षु न लिप्यते चाक्षुषैर्वाह्रदोषैः।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोक दुःखेन
वाह्रयः।।
यह कठोपनिषद् से लिया गया है।

द्वितीय अध्याय
द्वितीय वल्ली
(ग्यारहवाँ मन्त्र)

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्रादोषैः।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन ब्राह्रमः।।
११।।

(जिस प्रकार समस्त लोकों का चक्षु (प्रकाशक) सूर्य
(मनुष्यों के) नेत्रों में होने वाले बाह्रय दोषों से लिप्त नही

होता, उसी प्रकार सब प्राणियों का अन्तरात्मा, एक परमात्मा लोकों के दुखों से लिप्त नही होता। वह (तो) सबसे परे है।)